पंचम अध्याय

'युगे - युगे क्रांति' नाटक का देशकाल-वातावरण तथा शीर्षक —

पंचम् अध्याय

" युगे - युगे क्रांति " नाटक का देश-काल-वातावरण तथा शीर्षक "

प्रास्ताविक --

उपन्यास की भाँति नाटकों में देश, काल तथा वातावरण का ध्यान रखा जाता है। नाटककार का यह कर्तव्य है कि नाटक की कथावस्तु का संबंध जिस देश काल के साथ हो, उसके अनुरूप ही वातावरण आदि की सृष्टि करें अन्यथा कथावस्तु में दोष आ जाता है।

नाटक में घटनाओं का चयन करते समय इस बात का खयाल रखना चाहिए कि उनका रंगमंचपर अभिनय किया जा सके।

संकलन त्रय के निवाह को अश्क जी रंगनाटक के लिए आवश्यक मानते हैं। उनकी धारणा है --

-- " सफल रंगनाटक में समय, स्थान और अभिनय की इकाई विद्यमान रहती है। पुराने नाटक लम्बे भी होते थे और उनके एक-एक अंक में कई-कई दृश्य भी होते थे। और इसलिए उनमें संकलन-त्रय का ध्यान नहीं रखा जाता था। पर आज के नाटक दर्शकों की कल्पना पर निर्भर नहीं करते और यथार्थता का पूरा भ्रम मंच - पर उपस्थित कर देते हैं, इसलिए आज के रंगनाटक की आवश्यकताएँ भी बदल गई हैं, यथार्थ सेटिंग, त्वरित गति से चलनेवाली समय की इकाई में बँधी कहानी और यथार्थ अभिनय।" [१]

---

१ आधुनिक हिन्दी नाटयकारों के नाटय सिध्दात - डॉ. निर्मला हेमंत - पृ.३५९।

नाटक में सजीवता और स्वाभाविकता लाने का कार्य वातावरण करता है। 'युगे-युगे क्रांति' नाटक में हमें देश-काल का वातावरण व्यक्ति तथा उसके चरित्रों से अनुकूल लगता है।

नाटक की कथावस्तु सन १८७५ से लेकर आज की आधुनिक पीढी तक याने ऐसी पाँच पीढियों को लेकर घटित हुई है। 'युगे युगे क्रांति' नाटक में वर्तमान मध्यमवर्गीय समाज की विभिन्न समस्याओं विशेषकर प्रेम और विवाह की समस्या के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करते हुए समाज की परिस्थितियों, समस्त अंतर्विरोधों और प्रतिगामी तत्वों का यथार्थवादी ढंग से उद्घाटन किया है।

५.१ सन १९७५ के समय का वातावरण --

भारत देश में सन १८७५ में सामाजिक रीति ऐसी थी कि दिन में पत्नी का मुँह देखना कुलरीति के खिलाफ था। उस जमाने के लोग ऐसी हरकतों को पाप समझते थे। पति पत्नी रात में मिलते थे। लेकिन दिया नहीं जलाते थे। पत्नी का मुँह देखने का काम कुलीन लोग नहीं करते थे। इतनाही नहीं कि इस वातावरण का यह परिणाम हुआ था कि स्त्रियों को पति से प्यार की बातें करना भी अच्छा नहीं लगता था। रामकली पति से कहती है - "छी छी कैसी बातें करते हो। .... रही प्यार की बात सो वह भी क्या जताने की चीज है? प्यार जताने का काम तो कोठेवालियाँ किया करती हैं। इसलिए मर्द उनका मुँह देखते हैं। अपनी घरवाली का नहीं।" [१]

उस जमाने की स्त्रियों की पोशाक ऐसे वातावरण के अनुकूल ही थी। स्त्री लहँगा और ओढनी पहनती थी और घुँघट निकाल रखती थी। पुरुष धोती, कुर्ता और दुपल्ली टोपी पहनाते थे।

नाटक में यह देखकर हम जान जाते हैं कि सन १८७५ के समाज में स्त्रियों का

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति पृ.१४।

कोई स्थान नहीं था । बाहर की दुनियाँ तो क्या अपने घर में रहनेवाले पुरुषों को भी वह देख नहीं सकती थी । फिर भी समाज की ऐसी हालत होते हुए भी कुछ लोग समाज जागृति का तथा शिक्षाप्रसार का काम करते थे । रामकली की इन बातों से हमें यह पता चलता है ।

" हाय-हाय, यह फिरंगियों वाली बातें आपने कहाँ से सीख ली । कहीं आप उस नंगे साधू के पास तो नहीं जाने लगे जो जोर-जोर से बोलकर कोलाहल करता है और मूर्ति की पूजा करने को पाप बताता है । कहता है औरतों और भंगी-चमारों को पढाना चाहिए ।" [१]

५.२ सन १९०१ के समय का वातावरण —

कथावस्तु आगे चलती है अब सन १९०१ उजड गया है । इस जमाने में विधवा से विवाह करना पाप माना जाता था । समाज में विधवाओं का स्थान अत्यंत हीन था और ऐसी हालत में आर्यसमाज का उदय हो गया । आर्यसमाज में आनेवाले लोग आर्यसमाज के विचारों से प्रभावित किस तरह से होते थे इसका मूर्तिमंत उदाहरण प्यारेलाल है जिसकी पोशाक पाजामा और कमीज तथा सिरपर गोल टोपी । प्यारेलाल ने विधवा से विवाह करने का निर्णय लिया और घरवालों ने समाज भय के कारण विरोध किया । यहाँ इस कहानी के जरिए नाटककार ने हमारे सामने सन १९०१ के काल की सामाजिक मान्यताओं परंपराओं का चित्र प्रस्तुत किया है । वातावरण निर्मिती की दृष्टि से यह वर्णन सजीव बना है । स्थल तथा काल के अनुसार इसमें वातावरण सृष्टि हुई है ।

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.१५ ।

५.३ सन १९२० के समय का वातावरण --

सन १९०१ के पश्चात नाटकारने सन १९२० की पीढी का चित्रण किया है। इस काल में सारी जनता का ध्यान स्वाधीनता आंदोलन की तरफ था। गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन का प्रारंभ इसी समय किया था। स्त्री वर्ग में शिक्षा का प्रसार होने लगा था और इसी कारण इस समय कई नारियाँ साहसी दिखाई देती हैं। इस समय नारी घर की चार दीवारी लाँघकर पाषाण देने लगी थी। उसकी आवाज भी ऊँची बनी। यह नारी क्रांतिकारी रही और वह क्रांतिकारी होने के कारण उसके सिर पर पल्लू नहीं रहा। जो कुलरीति के खिलाफ था। वह ऐसी बातों को ढकियानूसी मानने लगी। आज ऐसी बातों की कोई जरूरत नहीं ऐसा उसका मत है। सिर खुला रखने में उसे कोई पाप नहीं लगने लगा। इतनाही नही तो वह पुरूषों के कन्धे से कन्धा भिडाकर युध्द में भाग लेने लगी। बात इतनीही नहीं तो वह यह अपना अधिकार मानने लगी। इस जमाने की स्त्री के विचार क्रांतिकारी बनने लगे। वह स्त्री-पुरूष से किसी भी बात में पीछे नहीं ऐसा मानने लगी वह कहने लगी कि स्त्री-पुरूष के अधिकार समान है, कर्तव्य भी समान हैं।

इस जमाने की स्त्री सिर्फ नारे ही नहीं लगाती तो उसकी कृति भी अत्यंत क्रांतिकारी रही है। वह देश के लिए जेल में भी जाने को तैयार रहती। उस काल में ऐसी क्रांतिकारी नारियाँ थी लेकिन तत्कालीन समाज में ऐसे भी लोग थे कि जो स्त्रियों का जेल जाना बुरी बात मानते थे, अधर्म मानते थे। स्त्री को ऐसा पुरूषार्थ शोभा नहीं देता ऐसा उनका कहना था। जैसे ---

दूसरा व्यक्ति -- अधर्म, घोर अधर्म। स्त्रियाँ घर से बाहर निकलने लगी। प्रलय के दिन आ गए। छि: छि: जो असूर्यपश्चाए थीं, परपुरूष की छाया जिन्हें भ्रष्ट कर देती थी, उन्हें पुलिस के ये शैतान लोग जेल ले जाएँगे। ये जेल में रहेंगी। तब ये पवित्र कैसे रह सकती हैं। हरे। हरे। कैसा घोर अधर्म होने लगा है। जिस समाज में स्त्रियाँ स्वेच्छाचारिणी हो जाती हैं वह समाज नष्ट हो जाता है।[१]

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.४०।

प्रस्तुत नाटक की शारदा जैसी नारियाँ आजादी के आंदोलन में कूद पड़ी थीं । नाटककार ने उस माहोल का चित्रण यथार्थता से किया है । पुरानी के ऐसे मत होते हुए भी इसी जमाने में ही विवाह में बदल आया है । इस समय शारदा जैसी हिन्दू लड़की पंजाब के खत्री से विवाहित हो गई है याने इस समय नाटककार ने अंतर्जातीय तथा अंतरप्रांतीय विवाह को दिखलाया है ।

गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित होने के कारण सन १९२० के प्रतिनिधित्व करनेवाले शारदा और विमल खद्दर पहने हुए दिखाई देते हैं । इस तरह नाटककार ने सन १९२० के काल का वातावरण सच्चाई से चित्रित किया है ।

५.४ सन १९४२ के समय का वातावरण --

नाटककार ने प्रस्तुत रचना में सन १९४२ के समय की नई तथा पुरानी-दोनों पीढियों का चित्रण किया है । तत्कालीन सामाजिक मान्यताओं में पुरानी पीढी के लोग विश्वास करते हैं किन्तु नई पीढी को इसमें विश्वास नहीं है । इस काल के प्रतिनिधित्व करते हैं शारदा और विमल का बेटा प्रदीप और बहू जेनेट । जब जमाना ऐसा आ गया है कि बेटा पिता से कुछ पूछे बगैर खुद की शादी खुद लड़की पसंद करके कोर्ट में जाकर करता है । जिस लड़की के साथ शादी करनी है उस लड़की की जाति तथा धर्म मालूम होना इस जमाने के लड़के जरूरी नहीं मानते । यह जो परिवर्तन है वह शिक्षा प्रसार का परिणाम लगता है । इसी समय के माता-पिता अंतरधर्मिय विवाह को इजाजत देते हैं लेकिन बहू के धर्मपरिवर्तन को उतनाही जरूरी मानते हैं । उन्हें लगता है परिवार की सुरक्षा तथा समाज के भय के कारण धर्म - परिवर्तन जरूरी ही है । लेकिन युवावर्ग इसके बिलकुल विरोधी है ।

कोर्ट में जाकर तथा माँ-बाप से न बताते हुए शादी करने के बाद भी इस पीढी के लोग माता-पिता को सिर झुककर नमस्कार करते हैं । बड़ों का कुछ हद तक आदर करते हैं ।

५.५ स्वातंत्र्योत्तर कालीन वातावरण --

नाटक की कथावस्तु अब आगे बढकर आज की अतिआधुनिक पीढी के वातावरण को प्रकट करती है। प्रस्तुत नाटक के अनिरुध्द तथा उसकी बहन अन्विता दोनों स्वातंत्र्योत्तर कालीन युवा पीढी के प्रतिनिधि पात्र हैं। इनके स्वभाव की विशेषताएँ देखने के पश्चात यह स्पष्ट होने में देर नहीं लगती कि यह आधुनिकता के रंग में रंगी नई पीढी है जिसके लिए कुछ भी विधि-निषेध नहीं है।

इस समय समाज के युवा वर्ग पर पाश्चात्य देशों के आचार-विचारों का प्रभाव दिखाई देता है। आज अनिरुध्द जैसे युवक विवाह बंधन को नहीं मानते वे कहते हैं कि विवाह गुलामी का पट्टा है। बन्धे रहने में प्यार नहीं मुक्तता में प्यार है। अनिरुध्द के रूप में आज युवा वर्ग पर स्वैर वृत्ति का प्रभाव दिखाई देता है। जो अपने बाप को हर दिन एक नयी लडकी का परिचय कर देता है। वह पिता की राजनीति और अपनी प्रेमनीति एकही में तौलता है।

इस समय की अन्विता जैसी युवतियाँ भी पाश्चात्य आचारों से प्रभावित हैं। वह एक के साथ प्यार करती है और दूसरे के साथ शादी। किन्तु ऐसे बर्ताव पर उसे कोई शर्म नहीं आती। इतनाही नहीं तो शादी का कार्ड खुद अपनी माता-पिता को देती है।

पाश्चात्यों का प्रभाव तथा अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव पडने के कारण बच्चे अपने माँ-बाप को 'नमस्कार' के अलावा 'हॅलो-हाय' करके पुकारते हैं।

बच्चों के इस तरह के बर्ताव का कारण है उनके पिता लोग आकंठ राजनीति में डुबे हुए रहते हैं।

आज की राजकीय स्थिति स्थिर नहीं है क्योंकि लोग एक पक्ष छोडकर दूसरे पक्ष में जाते हैं। यह बात आज के आधुनिक युग का प्रतिनिधित्व करनेवाले अनिरुध्द के वक्तव्य से मालूम होती है। " आप पहले गणतंत्र दल में थे, फिर

जनतंत्र में आए,उसके बाद जन-क्रांति में गए । अब फिर दक्षिण पंथी गणतंत्र में जा मिले ।" [१]

इस तरह ' युगे-युगे क्रांति' नाटक में वर्तमान मध्यम वर्गीय समाज की विभिन्न समस्याओं को उद्घाटित करने के लिए देश काल-वातावरण की निर्मिती यथार्थ ढंग से विष्णु प्रभाकर जी ने की है तत्कालीन समाज व्यवस्था का पता हमें प्रस्तुत नाटक के वातावरण से ही चलता है । तत्कालीन समाज का संपूर्ण चित्र सामने रखने की दृष्टि से जो वातावरण सृष्टि की है वह अत्यंत सफल है ।

निष्कर्ष --

प्रस्तुत नाटक में चित्रित देशकाल वातावरण का विवेचन करते हुए हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि प्रस्तुत नाटक सन १८७५ से आज तक के आधुनिक युग के वातावरण को चित्रित करता है । इतने बडे कालखण्ड को लेकर नाटककार ने वातावरण निर्मिती को बडे मेहनत से आसान बना दिया है । नाटक में पाँच पीढियाँ वर्णित हैं और पाँच पीढी के लोग अलग-अलग काल के हैं । नाटक में सन १८७५ का काल है यह पहली पीढी है । दूसरी पीढी का काल है सन १९०१ । तीसरी पीढी का वातावरण सन १९२०-२१ का है । चौथी पीढी के काल का वातावरण है सन १९४२ का तथा पाँचवी पीढी है स्वातंत्र्योत्तर काल की । इन पीढियों के बोलचाल से तथा रहन-सहन और रीति से हमें यह ज्ञात होता है कि किस काल के व्यक्ति किस तरह जीते थे । उनके सामाजिक,राजकीय ,धार्मिक,क्षेत्रों के बारे में क्या - क्या खयाल थे इसका भी पता चलने में देर नहीं लगती । सन

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.७२ ।

१८७५ से लेकर आज तक विवाह क्षेत्र में किस तरह बदलाव आया है और कौन से काल में विवाह का क्या रूप रहा है यह देश-काल-वातावरण से ही स्पष्ट होता है।

५.६ ' युगे - युगे क्रांति' नाटक का शीर्षक --

' युगे युगे क्रांति' नाटक निरंतर चलती आयी ' क्रांति ,परिवर्तन और संघर्ष पर लिखा गया है। इसमें नाटककार ने प्रदिपादित किया है कि प्रत्येक पीढी प्रचलित समाज व्यवस्था,नियम ,उपनियम को लाँधकर कोई नया कदम उठाना चाहती है।

' युगे युगे क्रांति' में एक पीढी से लेकर पाँचवीं पीढी तक प्रचलित विधान में युवक एक नया कदम उठा लेता है लेकिन अपनी प्रौढावस्था तक आते-आते वह यह अनुभव करता है कि जो कदम उसने उठाया था उसकी क्रांतिकारिता बदले हुए संदर्भ में (नए समाज में) पुरानी पड गयी है। हर पीढी के युवकों ने अपने युग में क्रांति की थी लेकिन जब वे बाप बन जाते हैं तो अपने बेटा - बेटी की क्रांति को गलत समझाते हैं। इसमें उन लोगों को खुद का अपमान लगता है।

इस नाटक की कथावस्तु सन १९७५ से लेकर आज तक के काल में से गुजरती है। हर पीढी का समय अलग अलग है। कोई सन १९७५ का प्रतिनिधित्व करता है तो कोई सन १९०१ का,कोई सन १९२० का तथा कोई सन १९४२ का और आज के आधुनिक युग का भी कोई प्रतिनिधित्व करता है।

नाटक का शीर्षक इसी कारण उपयुक्त लगता है कि हर युग में विवाह - प्रथम को लेकर क्रांति हुयी है। सन १८७५ में जीनेवाले कल्याणसिंह ने कुलरीति

के खिलाफ सब के सामने अपनी पत्नी का मुख देखकर क्रांती की थी । लेकिन अपनी संतान प्यारेलाल के समय वह प्रतिक्रियावादी बन जाता है । एक विधवा से प्यारेलाल का विवाह उसे पसंद नहीं आता है अत: वह उसका विरोध करता है ।

सन १९०१ में आर्यसमाज के प्रभाव के कारण प्यारेलाल ने विधवा कलावती से शादी करके क्रांति की थी । लेकिन उसकी बेटी शारदा का जमाना या तो वह वह पुरातणापंथी बन जाता है । माथेपर पल्ला न लेने तथा आंदोलन में भाग लेकर भाषण देने के कारण वह बेटी का विरोध करता है ।

सन १९२० में शारदा ने घर के चार दीवारी को लाँधकर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने की हिम्मत दिखायी थी । वह भाषण भी देती थी । उसके सिर-पर पल्लू भी नहीं होता । ` विमल` के साथ किया था और यहीं शारदा और विमल सन १९४२ में अपने पुत्र के जमाने में पुरातणापंथी दकियानूसी बन जाते है ।

सन १९४२ का प्रतिनिधित्व करनेवाला प्रदीप ईसाई जाति के कोली (प्रदीप की जाति से छोटी जातिवाले) लडकी जैनेट के साथ विवाह करता है । उसे धर्म तथा जात के बारे में कोई चिंता नहीं है । कोर्ट में जाकर अपनी माता-पिता की बिना राय तथा इजाजत लेते हुए शादी करनेवाला प्रदीप आज अपने ही आधुनिक विचारों के बेटी-बेटा के सामने पुरातन तथा पर्परावादी और दकियानूसी बन जाता है ।

आज के आधुनिक युग के प्रतिनिधित्व करनेवाले अन्विता तथा अनिरुध्द के विवाह के बारे में विचार पाश्चात्य विचारधारा से प्रभावित लगते हैं ।

अन्विता तो एक से प्यार करती है और शादी किसी और से तय करती है । अनिरुध्द विवाह बंधन को मानता ही नहीं उसे बंधन में प्यार नहीं लगता । वह कहता है -- " स्त्री को पति नहीं पुरूष अनिवार्य है और स्त्री-पुरूष को संबंध रखने के लिए किसी सर्टिफिकेट की जरूरत नहीं है ।

इस तरह हम देख सकते हैं कि विवाह प्रथा में किस तरह युगानुरूप क्रांति हुई है। पहले पहल दिन में पत्नी का मुँह देखना भी क्रांतिकारी कदम था। लेकिन हम धीरे-धीरे संबंध की इस भावना से विवाह संस्था के अस्वीकार तक पहुँच गए हैं। अब नयी पीढी तो दांपत्य जीवन को आवश्यक नहीं मानती। उसके मत से बिना विवाह किए भी स्त्री-पुरूष का संबंध बना रह सकता है। इस तरह विवाह विषयक युगों - युगों से चली आयी क्रांति के बदलते रूपों को प्रकट करना नाटककार का उद्देश्य रहा है।

प्रस्तुत नाटक के शीर्षक के बारे में डॉ. माधव सोनटक्के के विचार हैं ---

" नये विचार, नयी मान्यता, नये मूल्य, समय के गतिमान प्रवाह में पुराने हो जाते हैं और उसका विरोध करने के लिए नयी मान्यता नये विचार, नये मूल्य सामने आते हैं -- यह प्रक्रिया निरंतर है, अत: संघर्ष भी निरंतर है और संघर्ष की यही निरंतरता ही विकास है। संघर्ष निरंतर - एवं अंतहीन है इसलिए यह नाटक भी अंतहीन है। नाटक का शीर्षक भी इसी बात की अभिव्यक्ति करता है।" [१]

निष्कर्ष --

विवाह संस्था में होते आए बदलाव के रूप पर ही यह युगे युगे क्रांति नाटक आधारित है। नाटक का शीर्षक ही ऐसा सार्थक है कि नाम से ही हम जान जाते हैं कि युगानु-युगे किसी क्षेत्र में बदल (क्रांति) नेता आया है। सन १८७५ से लेकर आधुनिक युग तक विवाह संस्था का क्या रूप रहा है यह इसमें स्पष्ट किया है। हर काल में विवाह संस्था में बदलाव आया है जो पुरानी पीढी को मान्य नहीं है। यह बदलाव निरंतर है आगे भी रहेगा। इसी कारण निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि नाटक का ' युगे - युगे क्रांति' नाम उचित और सही है। नाम और कथावस्तु में एक मेल है जो नाटक पढते ही स्पष्ट होता है। प्रस्तुत नाटक का शीर्षककथानुकूल, विषयानुकूल, सार्थक, आकर्षक तथा समर्पक नजर आता है।

---

१ डॉ. माधव सोनटक्के - आधुनिक हिन्दी मराठी नाटक - पृ.६६।